इस्लामी अख़्लाक़

जनाब मौलाना नासिर बाक़री साहब क़िब्ला
अनुवादक : जनाब मौलाना सै0 एहतिशाम अब्बास ज़ैदी

तोहमत क्यों लगायी जाती है?

तोहमत के अहमतरीन सबब और वजहें नीचे दी गई हैं :

1– बेदीनी या ईमान की कमज़ोरी

2– हसद

''रेहानतुल अदब'' में मशहूर आम उलमा में से एक अली बिन मुहम्मद बिन सालिम आमदी हम्बली शाहरुख़ी के हालात में आया है कि वह मिस्र गए, बड़े–बड़े उलमा का मरजा क़रार पाए और उनकी शोहरत आलमी हुई इस वजह से वह फ़ुक़्हा के हसद का निशाना बने उन पर अक़ीदा ख़राब करने की तोहमत लगायी गई और उनके काफिर व वाजिबुल क़त्ल होने का फरमान तैयार किया गया इसी दरमियान एक साहेबे नज़र आलिम ने जो यह जानता था कि यह निस्बतें और तोहमतें बुख़्ल व हसद का नतीजा हैं, इस फरमान पर अरबी के दो शेर लिखे और इसके नीचे अपने दस्तख़त कर दिये, जिनका मतलब यह है :–

हासिद चाहता है कि जो नेअ्मत उसके हसद का सबब बनी है उसका ख़ात्मा कर दे, जब वह अपने मक़सद तक नहीं पहुँचता तो चाहता है कि उस नेअ्मत को पाने वाले पर तोहमतें लगाकर उसका इज्तेमाई और समाजी एतेबार ख़राब कर दे, इस तरह अपने अन्दर लगी हुई आग को तसल्ली दे सके।

यह क़िस्सा मशहूर है कि किसी ख़लीफा के ज़माने में एक शख़्स बहुत दौलतमन्द था, उसने एक गुलाम ख़रीदा, पहले ही दिन से उससे बड़ी महेरबानी के साथ पेश आता था और ज़िन्दगी के तमाम बेहतरीन सामान उसके लिए जमा कर रखे थे। गुलाम हमेशा अपने मालिक को टूटा हुआ और ग़मगीन देखता था और इसकी वजह नहीं जानता था। एक रोज़ मालिक ने गुलाम से कहा कि मैं तुम्हें आज़ाद करने और जितना पैसा चाहो देने पर तैयार हूँ शर्त यह है कि मुझे पड़ोसी की छत पर ले जाओ और वहाँ मेरा सर काट दो। गुलाम ने उससे इसकी वजह पूछी, उसने जवाब दिया : मैं अपने पड़ोसी को देख नहीं सकता क्योंकि उसकी ज़िन्दगी और दौलत मुझसे बेहतर और ज़ियादा है इसलिए यह बात इसकी वजह हुई कि मैं हमेशा हसद की आग में जलता रहूँ और मैं इस रास्ते से चाहता हूँ कि उस पर क़त्ल की तोहमत लगाऊँ ताकि उसे भी इसकी सज़ा में क़त्ल कर दिया जाए। गुलाम ने जिस तरह उसके मालिक ने कहा था उसे क़त्ल कर डाला और भाग गया। ख़बर फैलने के बाद पड़ोसी को गिरफ्तार और क़ैद किया गया लेकिन गुलाम को इसका एहसास चैन लेने नहीं देता था इसलिए उसने दरबार में हाज़िर होकर क़ाज़ी से सारा क़िस्सा बयान कर दिया। नतीजे में गुलाम और पड़ोसी दोनों आज़ाद कर दिये गए।

3– रज़ालत (नीचता)

4– हसद की वजह से दुश्मनी

5– दूसरों को तकलीफ़ देने और परेशान करने के लिए।

6– मायूसी और नाउम्मीदी पैदा कर देने के लिए।

7– बुरी नीयत और बिगाड़ पैदा कर देने के लिए।

इसका मुकम्मल नमूना मग़रिब की ख़बर देने वाली एजेंसियाँ हैं जो चन्द बड़े इदारों (यूनाइटेड प्रेस, ऐसोशिएटेड प्रेस, राइटर और फ्रांस प्रेस वग़ैरा) पर टिकी हुई है और इस्तेअ्मारियों की कुल्ली सियासत को रेडियो और टेलीवीज़न की लहरों के ज़रिए दुनिया के इन्सानों तक पहुँचाते हैं। रोज़ाना चार करोड़ पचास लाख अलफाज़ दुनिया के 110 से ज़ियादा मुल्कों तक पहुँचाते हैं। इन ख़बर देने वाली एजेंसियों की शरारतें और हटधरमियाँ इतनी बढ़ी हुई हैं कि फसाद पैदा करने और अपने इस्तेअ्मारी आक़ाओं के मक़सद हासिल करने के लिए बड़ी आसानी के साथ हर झूठ को सच और हर सच को झूठ बनाकर पेश कर देती हैं।

8– जुर्मों की सज़ा से भागना या उसमें कमी करने के लिए।

ख़ुदावन्दे आलम सूर–ए–निसा की आयत नम्बर 112 में इरशाद फरमाता है : "जो शख़्स किसी ग़ल्ती या गुनाह में फंस गया हो और उसे दूसरों की गर्दन पर डाले तो वह तोहमत और खुले हुए गुनाह का करने वाला हुआ है।"

एक दानिश्वर इस बारे में कहता है : "गुनाह समाज के लिए बहुत बड़ा ख़तरा है गुनाहगारी का एहसास बेगुनाही का ख़ौफनाक नतीजा वजूद में ला सकता है, जो आख़िरकार समाज की बुनियादों को भी तबाह कर देगा। कुछ ज़ियादा ग़ौर करने पर यह बात समझ में आती है कि अपने को बेगुनाह साबित करने का रद्देअमल इन्सान को दूसरों पर तोहमत लगाने के लिए उकसाता है। जो लोग तोहमत का निशाना बनते हैं वह भी अपने बचाव के लिए उठ खड़े होते हैं इस तरह इलज़ामों और उसके बचाव के रद्देअमल का एक सिलसिला सामने आता है, जिसकी ज़िन्दा मिसालें भी नज़रों के सामने आती रहती हैं। यह सब कुछ मिलकर एक मुल्क के लोगों का अख़लाक़ तबाह और खुद उस मुल्क को बर्बाद व वीरान कर देते हैं।

9– उन पसन्दीदा और मशहूर लोगों को बदनाम करने के लिए जो तोहमत लगाने वाले गिरोह या पार्टी से ताल्लुक़ नहीं रखते ताकि इस तरह उनको बदनाम करने के साथ–साथ पार्टी या गिरोह के सियासी मक़सद भी हासिल किए जा सकें।

मिसाल के तौर पर बनी सद्र, जो ख़ुद ज़ोर वाला, ताक़तवर और सरदारी चाहने वाला शख़्स था, हमने देखा कि उसने अपनी सदारत के ज़माने में किस तरह से अपने मददगारों की मदद से शहीदे मज़लूम आयतुल्लाह बेहेश्ती को ताक़त का चाहने वाला और ताक़त दिखाने वाला मशहूर किया और इस बात पर इतना ज़ोर देता था कि यह मज़लूम शहीद न सिर्फ ईरान में बल्कि पूरी दुनिया में बदनाम हो चुके थे।

10– अपने दुश्मन से बदला लेने के लिए।

कुछ लोग अपने सीनों में भड़कती हुई हसद व जलद की आग बदले के ज़रिए ठण्डी करने के लिए सबसे आसान रास्ता चुनते हैं यानी अपने दुश्मन पर तोहमत लगाते हैं। **(जारी)**